वल्लभं मधुरं

दर्शकः

प्रशान्त घनश्याम-जमुना देसाई

रत्न

१

Vallabham Madhuram

based on

Madhurāṡhtakam

of

Pujya Shrï Vallabhāchārya

Written & published by

Prashant Desai

Dipt.me

e-publication

April 12, 2025

मूल्यः सहयोग-सेवा

संपर्कः usha.dipt@gmail.com

© Prashant Desai

All Rights Reserved.

Without the prior written permission of the publisher,

This book may not be reproduced or sold in any form.

Email: usha.dipt@gmail.com / Visit at: www.dipt.me

हरिॐ नमो भगवते श्रीकृष्णाय वासुदेवाय

श्रीवल्लभाचार्यविरचितम्

॥ मधुराष्टकम् ॥

आधारित

श्रीवल्लभ साहित्यमाला ः रत्न - १

वल्लभं मधुरम्

श्लोक पदच्छेद अन्वय
भाषांतर संकेत

दर्शक ः प्रशांत घनश्याम-जमुना देसाई

प्र.लेख

आचार्य श्रीवल्लभकी साहित्यमालाका यह प्रथम रत्न है। अखिल मधुर श्रीकृष्ण और पूर्णभक्तिसे मधुर हुए श्रीवल्लभके, तैजसी मिलनका यह स्तोत्र.. दर्शन.. गीत.. स्मृति.. अनुभूति.. जो भी कहो, ये प्रथम स्थानमें ही आयेगा। श्रीवल्लभको प्रभुका अखिलं.. समग्र मधुर लगा! भगवानकी मधुरता उन्होंने मानी और हमारे लिये लिख रखी! मधुराष्टक जितना सरल है उतना गुह्य भी है, कारण वो माधुर्य पानेके लिये हमें क्या करना चाहिये, उसका गुप्त संकेत इस अष्टकमें दिया है!

आचार्यश्री जानतें है कि भगवान तक पहोंचनेमें कितने जन्म जातें है! इसलिये वो हमको निर्देश करतें है कि 'भक्ति करो!' सरल होगा, त्वरित होगा!

भगवाननको क्या पसंद है? मख्खन। कैसा है? शुभ्र, सुंदर, स्वच्छ, सात्त्विक, स्निग्ध, स्वादिष्ट, स्मृतिवर्धक और शक्तिदायक! ऐसा मख्खन जैसा जीवन हो जाय तो कान्हाको भायेगा और ले जायेगा! महापुरुष ऐसे मधुर होतें है।

मख्खन बनानेमें कितनी महेनत! दूध दोहन, तपन, अद्रिकण मिलन, हलका उष्मित समय दो, तब जाकर तो दधि बनें! पश्चात् योग्य प्रमाणमें पाणी देकर ठिकसे वलोयें तब, मख्खन और छाछ अलग होंगे! मख्खन तैयार होनेमें इतना समय और प्रयत्न चाहिये, तो क्या माणस दो दिनमें तैयार होगा? भगवानको पसंद आ जायेगा? बहुनाम् जन्मनाम् अंते! कमसे कम तीन जन्म चाहिये ही!

मख्खन जैसा मानव तैयार करनेकी इस प्रक्रियाको भक्ति सरल करेगी, मनुष्य जन्मका मिलना उसे ही दूध दोहन कहें, क्योंकि अनेक जन्मोंके पुण्य प्रतापसे मानवदेह मिलता है! उसे मनुष्यत्वमें तपाना पडता है! पश्चात् जो कोई ब्रह्मनिष्ठ महात्माके सत्संगका अद्रिकण जीवनमें घूलमिल जायें तब स्वभाव बदलेगा। अतिरिक्त स्वाध्याय या सत्संगकी उष्मा और योगमार्गकी समयावधी मिले तो दधि जैसा शुद्ध जीवन जमें! बादमें किसी जन्ममें उस परिशुद्ध जीवनको भगवद्गीताके विचारोंका पाणी मिले और प्रभुकार्यसे जीवनका घूमन हो तब, मख्खन जैसा जीवन और संसाररूपी छाछ अलग होंगे! वो मख्खन ही है ये सब महान भक्त.. महापुरुष.. आचार्य! उनके जीवनमें भगवान आकर बसतें है! वे जीव न रहते हुए शिव हो जातें है!

अगणित जन्म-मृत्यु होते ही रहेंगे। उन फेरोंमेंसे मुक्त होने हेतु ही मनुष्य देह मिला है। मनुष्य जीवन मिलनेके पश्चात् दो मार्गोंसे उसका अंत होगा। ज्ञानमार्गसे या भक्तिमार्गसे! दोनोंमें कर्म अनिवार्य ही है! कर्म तो करने ही होंगे, किसीको छूट नहीं मिलती है, क्योंकि कर्म ही ज्ञानमें परिणित होतें है।

ज्ञानमार्गमें ज्ञानी ब्रह्मरूप होगा, ब्रह्मनिर्वाण पायेगा। जबकि भक्तिमार्गमें भक्त, ब्रह्मरूप होगा उपरांत भगवानमें एकरूप होगा! द्वैतभावका आनंद भी लेगा! तद्धामः परमं मम.. वहाँ पहोंचेगा! पर इन दोनोंमेंसे एक भी स्वीकार नहीं किया तो, घूमते रहनेके लिये चोर्याशीलाख तैयार ही है!

भगवान तो 'मधुर' है ही! हम आचार्यश्री जैसे मधुर कब होंगे? इतना ही प्रश्न है। विशुद्ध चरित्र, परिशुद्ध चित्त, पवित्र कर्मों और प्रामाणिक भक्ति! जो ये सभी शक्य है तो मधुर जीवन मिलेगा ही मिलेगा! उसके लिये भगवद्गीताके विचार, आदर्श भारतीय जीवनप्रणाली और शास्त्रीय भक्ति, इतना जीवनमें आ जाय तो किसीकी ताकात नहीं कि उपरोक्त फलको रोक सके! और सबकुछ शक्य है!

मध कितना मिठा है वो चखे विना कैसे पता चलेगा? आचार्यश्रीने जो मधुरिमा मानी उसका स्वाद हमको कैसे पता चलें? परंतु वो स्वाद हमें मिले इसलिये वल्लभाचार्यजीने, इस अष्टकमें कुछ गुप्त संकेत दियें है, उसे जाननें है, तो इस अष्टककी सार्थकता है! उन्होंने जो सूचन किये है उनकी अनुभूति लेनी है इसलिये, भाषांतरके बाद 'संकेत'में उन रहस्योंको समझनेका प्रयत्न करेंगे।

श्रीवल्लभको सर्व मधुर लगा, लगेगा ही! सामने है कौन? श्रीकृष्ण! परंतु भगवानको भी मधुर लगा ही होगा न! इसलिये तो तैजसरूपसे मिले! निश्चित ही भगवानने कहा ही होगा, वल्लभं मधुरम्! मेरा प्रिय.. मेरा वल्लभ मधुर है!

ऐसा मधुर जीवन हम सबका हो ऐसी प्रभुको प्रार्थना। कम वाक्योंमें विशेष कहनेका प्रयास किया है तो, शांतिसे ध्यानपूर्वक पढकर, ओर भी विशेष चिंतन-मनन करोगे ऐसी अपेक्षा रखता हूँ। जय श्रीकृष्ण।

नित्य जिज्ञासु,
प्रशांत देसाई

रामनवमी
ता. ६ ॲप्रिल २०२५

१ अधरं मधुरं वदनं मधुरं नयनं मधुरं हसितं मधुरम्।
हृदयं मधुरं गमनं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥

अधरम्	मधुरम्	वदनम्	मधुरम्	नयनम्	मधुरम्	हसितम्	मधुरम्
ओष्ट	मधुर	मुख	मधुर	आंख	मधुर	हास्य	मधुर

हृदयम्	मधुरम्	गमनम्	मधुरम्	मधुर-अधिपतेः	अखिलम्	मधुरम्
हृदय	मधुर	चाल	मधुर	मधुरके अधिपतिका	सब ही	मधुर है

श्रीकृष्णस्य.. मधुर अधिपतेः अखिलम् मधुरम् (अस्ति। तस्य)
अधरम् वदनम् नयनम् हसितम् हृदयम् गमनम् (सर्वम्) मधुरम्॥

श्रीकृष्णका.. मधुरके अधिपतिका, अखिल.. समग्र.. संपूर्ण, मधुर (है, उनके) अधर.. होंठ, वदन.. मुखकमल, नयन.. अक्षकमल, हास्य.. स्मित, हृदय.. स्वभाव, गमन.. गति या चाल.. आना-जाना (सर्व ही) मधुर.. प्रेमपूर्ण है।

संकेत ः 'प्रेमपूर्णता' यह मधुरिमा मात्र भक्तिसे ही मिलती है। प्रेमसे मधुर और ज्ञानसे पवित्र, यहाँ कुछ है ही नहीं। इसलिये दोनों भगवानके स्वरूप माने गयें है। कुटुंबमें प्रेम हो तो कोई समस्या नहीं रहती! सब हँसते हँसते एक दूजेको सहन कर लेते है! वैसे भगवान पर प्रेम होगा तो, उसकी सृष्टि समस्या न लगेगी! जीवन प्रसन्न रहेगा। जैसे संत चलता भला! वैसे भक्त हँसता भला!

अधर, वदन, नयन, ये सब हसितं.. हँसते हूए है तो भगवानको पसंद है! रोता किसीको भाये? ना, तो भगवानको कैसे भाये? कैसी भी परिस्थितिमें प्रसन्न व्यक्तित्व प्रभुको भाये, जो प्रेमसे ही शक्य है। आंखोमें, स्मितमें, वदनमें मात्र प्रेम!

दूजा हृदयं, गमनं.. दौडता होगा तो भगवानको भाये! जो हृदय प्रभुको प्रेम करता हो वो नहीं थमेगा, चलता भला! चरैवेति! कोई ऋषि या आचार्य गादीपति हुए ही नहीं, भगवानके विचारोंको लेकर घूमते ही रहे! हृदय उसके लिये धडकता है। भगवान! आपके विचारोंसे जगत वंचित है, मैं ले जाऊँगा! प्रेमसे समझाऊँगा! भक्ति प्रेमपूर्ण होगी तभी खिलेगी! अन्य बाबतोंको कोई स्थान ही नहीं।

हम भक्त होंगे तब होंगे! अभी तो हमारे लिये है, प्रभुप्रेमं मधुरम्! यदी प्रभुके प्रेमका उपकार मैंने प्रेमसे ही चूकाया, तो मेरा जीवन सच्चा!

२ वचनं मधुरं चरितं मधुरं वसनं मधुरं वलितं मधुरम्।
चलितं मधुरं भ्रमितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥

वचनम्	मधुरम्	चरितम्	मधुरम्	वसनम्	मधुरम्	वलितम्	मधुरम्
वाणी	मधुर	आचरण	मधुर	वस्त्र	मधुर	वक्रता	मधुर

चलितम्	मधुरम्	भ्रमितम्	मधुरम्	मधुर-अधिपतेः	अखिलम्	मधुरम्
चलन	मधुर	भ्रमण	मधुर	मधुरके अधिपतिका	सब ही	मधुर है

श्रीकृष्णस्य.. मधुर अधिपतेः अखिलम् मधुरम् (अस्ति। तस्य) वचनम् चरितम् वसनम् वलितम् चलितम् भ्रमितम् (सर्वम्) मधुरम्॥

श्रीकृष्णका.. मधुरके अधिपतिका, अखिल.. समग्र.. संपूर्ण, मधुर (है, उनके) वेण.. वचनामृत, चरित.. आचरण या व्यवहार, वसन.. परिधान, वलित.. त्रिभंगाकृति या वक्रगति, चलित.. विचलन या संचलन, भ्रमित.. भ्रमण या परिभ्रमण (सर्व ही) मधुर.. आत्मीय है।

संकेत ः 'आत्मीयता'से जीवन मधुर होगा! भगवानका बोलना, चलना यह सब आचार्यश्री जानें! परंतु हमको धीरेसे बतातें है कि, प्रभुका आत्मीय होना हो तो प्रथम, उसकी संस्कृतिको आत्मीय करनी होगी.. आत्मसात् करनी ही होगी!

भारतीय सनातन संस्कृति विश्वमें अजोड है। उसे अपनाओगे तो जीवन सफल होगा ही! जिस संस्कृतिके लिये भगवानने कितनें अवतार लिये! उसे स्वीकार किये विना चाहे कितने ही देव-देवी पूजेंगे, व्यर्थ है; क्योंकि ईश्वरको न भायेंगे।

आजके उत्सव देखो, लोगोंका बोलना-चलना, युवकोंके वस्त्र परिधान देखो, सांस्कृतिक है? उत्सव मनाना संस्कृतिपूर्ण है या विकृतिपूर्ण! रहेन-सहेन प्रभुको पसंद आयेंगे क्या? कहते है, जो प्रभुका संभालते है, उसे प्रभु ज्यादा संभालते है! तो भारतीय संस्कृति उसकी ही तो है! उसे संभालना ही सच्ची भक्ति है।

महापुरुषोंको सब आत्मीय लगे। हम अपने हरिभक्तोंको तो आत्मीय कर लें! उनके साथ जो चलन है, भ्रमण है, सब स्वार्थरहित आत्मीयतासे करें! उनके लिये वलितं.. थोडा झुकेंगे.. काम करेंगे तो वांकेविहारीको भायेंगे ही।

स्वार्थरहित आत्मीयतामें माधुर्य है। ऐसे संबंध बँधे हो तो अहोभाग्य! संस्कृति सर्वोपरि! उसका स्वीकार, उसका रक्षण, उसकी आत्मीयता वो ही मधुरम्!

३ वेणुर्मधुरो रेणुर्मधुरः पाणिर्मधुरः पादौमधुरौ।
नृत्यं मधुरं सख्यं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥

वेणुः	मधुरः	रेणुः	मधुरः	पाणिः	मधुरः	पादौ	मधुरौ
बांसुरी	मधुर	रज	मधुर	हाथ	मधुर	चरणयुगल	मधुर

नृत्यम्	मधुरम्	सख्यम्	मधुरम्	मधुर-अधिपतेः	अखिलम्	मधुरम्
नाचना	मधुर	मित्रता	मधुर	मधुरके अधिपतिका	सब ही	मधुर है

श्रीकृष्णस्य.. मधुर अधिपतेः अखिलम् मधुरम् (अस्ति। तस्य) वेणुः रेणुः पाणिः (सर्वः) मधुरः, पादौ मधुरौ, नृत्यम् सख्यम् मधुरम्॥

श्रीकृष्णका.. मधुरके अधिपतिका, अखिल.. समग्र.. संपूर्ण, मधुर (है, उनके) वेणु.. बांसुरी, रेणु.. पदरज, हस्तकमल, दोनों चरण, नृत्य.. रासलीला, सख्य.. मित्रता (सर्व ही) मधुर.. रमणीय है।

संकेत ः 'रमणीयता'में मधुरता है! रम्यजीवन यह आनंदमय जीवनका पर्याय है। आचार्यश्रीने ऐसा रम्य कान्हा देखा होगा! इसलिये कहते है, जीवन हसते खेलते नाचते गाते हुए व्यतित होना चाहिये। रम्यतामें रोमांच है, मधुरता है।

कुछ लोग इतने नीरस होते है, पूछो मा। किसी कलामें रस नहीं, कमसेकम संगीत तो भायें, वो भी नहीं! मुखं रोतलं जीवनं जेलं! ऐसे लोगोंको कनैयाका जीवन अवश्य देखना चाहिये। लोगोंको लगता है, राम और कृष्ण तो भगवान थे, उनको कहाँ कष्ट थे? ऐसा नहीं है, दोनों बचपनसे ही भारी परिश्रमी थे। कान्हा गैया चराने जाता था, वेणु बजाकर गौओंकी रक्षा करता था। उसे लगता था, गोधुलीसे.. उनकी रेणुओंसे पावन हूँ! हम हाथ-पैर प्रभुके लिये घिसेंगे तो पावन होंगे। जो लोग निःस्वार्थभावसे, बचपनसे ही किसी सेवाकार्यमें संलग्न है, वें धन्य है! रामने कोई चमत्कार नहीं किये, मानव रेहकर ही हमारे आदर्श बनें है। उनके जीवनमें भी संगीत, नृत्य सब कुछ होगा, नीरस नहीं थे! ऐसे दर्शातें है।

जीवन रम्य लगना चाहिये, खेलके लिये सखा.. मित्र चाहिये! भक्तोंको ही सखा बना लें तो! नाचते-गाते जीवन पसार होगा और भगवानको भायेंगे! किसी कलामें रस लेकर तो देखें! हाथ-पैर रमणीय लगेंगे, सृष्टि रम्य होगी, मधुरेश्वरका दिया हुआ सर्व ही मधुर लगेगा!

४ गीतं मधुरं पीतं मधुरं भुक्तं मधुरं सुप्तं मधुरम्।
रूपं मधुरं तिलकं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥

गीतम् मधुरम् पीतम् मधुरम् भुक्तम् मधुरम् सुप्तम् मधुरम्
गान मधुर पान मधुर भोजन मधुर शयन मधुर
रूपम् मधुरम् तिलकम् मधुरम् मधुर-अधिपतेः अखिलम् मधुरम्
स्वरूप मधुर तिलक मधुर मधुरके अधिपतिका सब ही मधुर है

श्रीकृष्णस्य.. मधुर अधिपतेः अखिलम् मधुरम् (अस्ति। तस्य)
गीतम् पीतम् भुक्तम् सुप्तम् रूपम् तिलकम् (सर्वम्) मधुरम्॥

श्रीकृष्णका.. मधुरके अधिपतिका, अखिल.. समग्र.. संपूर्ण, मधुर (है, उनके) गीत.. गान-संगान, पीत.. रसपान, भुक्ति.. भोजन या भोग, सुप्ति.. शयन.. निद्रा, रूप.. शोभा या सौंदर्य, तिलक.. ललाट शोभा (सर्व ही) मधुर.. चिद्घन है।

संकेत ः 'चैतन्य' जीवनमें माधुर्य भरें। कलियुगमें भक्ति ही चेतना देंगी। आज गान पान भोजन शयन सभी कलियुगी हुए है, उसमें महत्तम जीव नष्ट हुए.. बिगडे। चूँकि ये तो कलियुगका काम ही है, ज्यादासे ज्यादा गीराने है!

यहाँ आचार्यश्री लालटेन धरतें है, जो जो ग्राह्य.. लेनेकी वात है उसका ध्यान रखें। वित्त और विषय भी उसमें आ गये। निंद खान पान गान संयमित लें। उन बाबतोंमें जितने सात्त्विक रहोगे उतने लाभमें रहोगे। गीत भी सात्त्विक सुनें, भक्तिपूर्ण होंगे तो उत्तम! गति बढेगी। इन चारोंके संस्कार बचपनसे मिलेंगे तो युवानी खिल उठेगी, सात्त्विकता विना रेह नहीं पाओगे। सात्त्विकता भक्ति करवायेगी और सात्त्विक भक्ति ही चैतन्यपूर्ण होगी।

रूप! ओ हो हो, किसी कालमें इतना ध्यान नहीं दिया गया! पर भगवानको कौनसा रूप प्रिय लगेगा? चैतन्यमय भायेगा! वो रूप प्रसाधनोंसे नहीं मिलता, आंतरिक ओजससे मिलेगा। हमें महापुरुषोंकी भाँति वह ओजस पाना है।

तिलक! ललाटकी शोभा भी, पूजन भी। ऋषियोंने तिलकको बुद्धिपूजन माना है, प्रेरक होकर भगवाने भी किया है! बुद्धिको चैतन्यपूर्ण करने, बुद्धि प्रज्ञा हो और भगवानको भायें ऐसी मधुर हो, इसलिये तिलक करना है। बुद्धि, आत्मदर्शनके लिये एकमात्र साधन है! इसलिये ललाटका पूजन आवश्यक है।

५ करणं मधुरं रमणं मधुरं तरणं मधुरं हरणं मधुरम्।
वमितं मधुरं शमितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥

करणम् मधुरम् रमणम् मधुरम् तरणम् मधुरम् हरणम् मधुरम्
करना मधुर रमना मधुर तैरना मधुर हरना मधुर
वमितम् मधुरम् शमितम् मधुरम् मधुर-अधिपतेः अखिलम् मधुरम्
वमन मधुर शमन मधुर मधुरके अधिपतिका सब ही मधुर है

श्रीकृष्णस्य.. मधुर अधिपतेः अखिलम् मधुरम् (अस्ति। तस्य)
करणम् रमणम् तरणम् हरणम् वमितम् शमितम् (सर्वम्) मधुरम्॥

श्रीकृष्णका.. मधुरके अधिपतिका, अखिल.. समग्र.. संपूर्ण, मधुर (है, उनके) करण.. साधन या कार्य, रमण.. रमत या खेलना, तरण.. तैरना या तारना, हरण.. वशमें लेना, वमित.. वमन, शमित.. शमन.. शांति (सर्व ही) मधुर.. श्रद्धाप्रद है।

संकेत ः 'ईशश्रद्धा' मधुर है, हमारे लिये! प्रभुतक पहोंचनेके लिये। हमको ईश्वरका कोई परिचय नहीं, उनपर श्रद्धा कैसे बैठें? इसलिये जो श्रद्धाप्रद है वे मधुर है। जिनको आचार्यों, ऋषि-मुनि, महापुरुषों पर श्रद्धा है उनको ईशश्रद्धा होगी। यहाँ आचार्यजी कहतें है, श्रद्धा रख! करणं.. तेरे आवश्यक कार्य वो ही पूर्ण करेंगे। तरणं.. भवसागर वो ही तारेगा। हरणं.. अनावश्यक बाबतोंको वो ही हर लेंगे और स्मरणं! ये तो श्रद्धाकी फलश्रुति है! वो नित्य तेरे स्मरणमें रहेंगे। कलियुगमें नामस्मरण ही आधार है। नाम ही नाव! करेगी पार!

परंतु, इसका अर्थ ये नहीं कि हमें हाथ-पैर जोडे बैठे रहेना है। पूर्ण प्रयत्न और पुरुषार्थ करने होंगे क्योंकि, आत्मप्रत्यय + गुरु शिक्षा = ईशश्रद्धा।

श्रीवल्लभ आगे कहतें है, वमितं! जीवनमें कोई ऐसा होना चाहिये जहाँ मनका भार या हृदयके भाव निकाल सकें। इसके लिये मित्र या गुरु है, अन्यथा प्रभु तो है ही! प्रतिसाद नहीं मिलगा या देर लगेगी पर पाप-पुण्यका भार वहाँ वमो.. बहार निकालो! तो शमन होगा! जहाँतक मनमें उचाट, दिलमें खिचकाहट होगी वहाँतक शांति नहीं.. शमन नहीं। वैसे भी, दुःखको रोने या सुखको कहेने कहाँ जातें है? भगवानके पास ही न! उसके लिये भक्ति ही आधार है! और श्रद्धा विना वो शक्य नहीं! इसलिये अभी तो हमारे लिये, श्रद्धा मधुरा!

६ गुंजा मधुरा माला मधुरा यमुना मधुरा वीची मधुरा।
सलिलं मधुरं कमलं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥

गुंजा	मधुरा	माला	मधुरा	यमुना	मधुरा	वीची	मधुरा
गुंजन	मधुर	माला	मधुर	यमुना	मधुर	तरंग	मधुर
सलिलम्	मधुरम्	कमलम्	मधुरम्	मधुर-अधिपतेः		अखिलम्	मधुरम्
जल	मधुर	कमल	मधुर	मधुरके अधिपतिका		सब ही	मधुर है

श्रीकृष्णस्य.. मधुर अधिपतेः अखिलम् मधुरम् (अस्ति। तस्य) गुंजा माला यमुना वीची (सर्वा) मधुरा, सलिलम् कमलम् (सर्वम्) मधुरम्॥

श्रीकृष्णका.. मधुरके अधिपतिका, अखिल.. समग्र.. संपूर्ण, मधुर (है, उनके) गुंजन.. गुंजारव, माला.. विजयमाला, यमुना.. प्रियतरा भक्ति, उसकी तरंगें, उसका पावन जल, उसमें खिलते कमल, (सर्व ही) मधुर.. भावपूर्ण है.

संकेत : 'भक्तिभाव' मधुरतर है। इसे समझानेके लिये महापुरुषोंने उनके जीवन घिस डालें! प्रभुके गुंजन और मालाएँ मधुर होंगे ही, पर आचार्यश्रीका कहेना है, उसके नामका गुंजन करते रहो, याद ना रहें तो मालाको साथमें रखो; उसे देखकर नाम-स्मरण याद आयेगा। प्रेम और श्रद्धा हरि स्मरणको दृढ करेंगे!

श्रीवल्लभको उनके सभी ग्रंथोंसे ये समझाना है कि प्रथम भक्ति-शरण हो, भक्ति ही प्रभुतक ले जायेगी! और यमुनाजी स्वयं भक्तिका अवतार है। वो मधुरतरा भक्तिका.. यमुनाजीका दर्शन, वल्लभाचार्यने किया है!

आचार्यश्री कहतें है, आपका स्व-भाव ही भक्ति-भाव होना चाहिये, तभी भक्तिकी शरणमें हो ऐसा होगा। भक्ति मधुरा है पर हमारे लिये भक्तिभाव मधुर! भक्तिकी तरंगें ही नवधा भक्तिभाव है! श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वंदन, दास्य, सख्य और आत्मनिवेदन। एक एक तरंग एक एक सोपान जैसी है!

सलिल.. भक्तिका पाणी मापे नहीं, सीधे डूब जाना! कमल जैसे सुंदर, कोमल, पावन, मधुर होकर बहार निकलोगे! डूबनेका अर्थ है, अबसे हरेक कर्म भक्तिभावसे करने है! कर्मोंमें स्वार्थ नहीं, ओर कोई भाव नहीं। प्रत्येक कर्म अबसे सेवाभावसे प्रभुके चरणोंमें धरनें है! वे भक्तिपूर्ण कर्म ही ज्ञानतक ले जायेंगे। सर्वं कर्माखिलं पार्थ! ज्ञाने परिसमाप्यते। (गीता ४.३३)

७ गोपी मधुरा लीला मधुरा युक्तं मधुरं मुक्तं मधुरम्।
दृष्टं मधुरं शिष्टं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥

गोपी	मधुरा	लीला	मधुरा	युक्तम्	मधुरम्	मुक्तम्	मधुरम्
गोपी	मधुर	रमत	मधुर	संबंध	मधुर	उद्धार	मधुर
दृष्टम्	मधुरम्	शिष्टम्	मधुरम्	मधुर-अधिपतेः		अखिलम्	मधुरम्
देखना	मधुर	शिष्टाचार	मधुर	मधुरके अधिपतिका		सब ही	मधुर है

श्रीकृष्णस्य.. मधुर अधिपतेः अखिलम् मधुरम् (अस्ति। तस्य)
गोपी लीला मधुरा, युक्तम् मुक्तम् दृष्टम् शिष्टम् (सर्वम्) मधुरम्॥

श्रीकृष्णका.. मधुरके अधिपतिका, अखिल.. समग्र.. संपूर्ण, मधुर (है, उनके) गोप-गोपीयाँ, रासलीला मधुर है। युक्त करना.. संबंध, मुक्त करना.. उद्धार, दृष्टि.. द्रष्टिपात, शिष्टि.. शिष्टाचार, (सर्व ही) मधुर है.. तर्कसंगत है।

संकेत ः 'ज्ञानपूर्णता' मधुरंमधुर! भक्तिकी शक्तिसे प्रथम तो इन्द्रियाँ पावन और सात्त्विक होगी। आचार्यजी कहतें है, गो.. इन्द्रिय, वाणी या सामर्थ्य, वे सभी प.. पवित्र होंगे। गोप-गोपीयाँ तो पावन थे ही! उनकी भाँति, भक्तिकी दृष्टिसे पूरी सृष्टि बदल जायेगी। शिष्टं.. शेष जीवनके शिष्टाचार रम्य हो जायेंगे! यह सृष्टि ही अब लीला लगेगी! लीला अर्थात् रमत और आनंद! ऐसा होनेसे युक्तं.. पूर्णयोग साध सकेंगे और मुक्तं.. सुख-दुःख जैसे द्वन्द्वोमेंसे मुक्ति पायेंगे!

सच्चे जीवनका आरंभ ही अब होगा, भक्तिपूर्ण और ज्ञानपूर्ण भी! यह भक्तिका प्रताप है! भक्तिपूर्ण कर्म ही सभी ऋणोंमेंसे मुक्त करेंगे, जीवनको परिशुद्ध करेंगे, तत्पश्चात् ही ज्ञान होगा! ज्ञान बहारसे आता ही नहीं है, अंदरसे ही प्रगटे!

अभी हमारे पास जो ज्ञान है वो माहितीज्ञान है, विगत.. जाणकारी है, अनुभूति नहीं है। जबकी महात्माओंके पास अनुभूतज्ञान होता है, विज्ञान.. अनुभवमें आया हुआ ज्ञान है, जो कभी नष्ट न होगा या भूला नहीं जायेगा! जो अंतिम ज्ञान है कि 'मैं ब्रह्म हूँ' उसकी हमको माहिति है, जबकि महापुरुषको उसकी अनुभूति है। ज्ञानीको.. सच्चे संन्यासीको तपस्यासे ब्रह्मकी अनुभूति होगी, जबकि भक्तको सेवाकर्मका आनंद मिलेगा और वे कर्म ही ज्ञानरूप होंगे! दो दो आनंद! इसलिये भक्ति एक कदम आगे है! द्वैतका आनंद भी होगा, मधुरं मिलनं.. ..

८ गोपा मधुरा गावो मधुरा यष्टिर्मधुरा सृष्टिर्मधुरा।
दलितं मधुरं फलितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥

गोपा	मधुरा	गावः	मधुरा	यष्टिः	मधुरा	सृष्टिः	मधुरा
गोवालें	मधुर	गैया	मधुर	छडी	मधुर	सृष्टि	मधुर

दलितम्	मधुरम्	फलितम्	मधुरम्	मधुर-अधिपतेः	अखिलम्	मधुरम्
खिलना	मधुर	फलना	मधुर	मधुरके अधिपतिका	सब ही	मधुर है

श्रीकृष्णस्य.. मधुर अधिपतेः अखिलम् मधुरम् (अस्ति। तस्य)
गोपा गावः यष्टिः सृष्टिः मधुरा, दलितम् फलितम् (सर्वम्) मधुरम्॥

श्रीकृष्णका.. मधुरके अधिपतिका, अखिल.. समग्र.. संपूर्ण, मधुर (है, उनके) गोपा.. गोवाल, गाव.. गोवृंद.. गैया, यष्टि.. छडी.. लकडी, सृष्टि.. अद्भुत वनसृष्टि मधुर है। खिलना.. फूलना, फलित.. फलना (सर्व ही) मधुर.. परमं है।

संकेत ः 'भगवत्स्पर्श' मधुरतम अनुभूति है! भगवानके अतिप्रिय उन ज्ञानी-भक्तोंको यह अनुभूति मिली है! जीवन कृतकृत्य हो जाय! कितने ही जन्मोंके बाद यह लाभ मिले! एक जन्ममें भगवत्स्पर्श और दूसरेमें भगवत्संश्रितः!

कहेते है, कितने पुण्य किये होंगे उन गोवालोंने! वे गोपा.. गोवालें, गावो.. गोधनके साथ अपनी यष्टी.. छडी लेकर निकल पडते थे, कनैयाके साथ अनोखी सृष्टिमें! रमते नाचते आनंद करते! कान्हासे ज्ञान संपादन करते और राक्षस आये तो उसकी मदद करते। ये कान्हाके मित्र.. सखाएँ! प्रेम-ज्ञानसे भरपूर!

वृक्ष कैसा फूले फले है! अर्थात् फूल बैठे बादमें फल लगे! अपना भी वैसा ही है, जीवनवृक्षको भक्तिका फूल लगे, दलितं.. खिलेगा पश्चात् वहाँ फलितं.. ज्ञानका फल लगेगा! जीवनवृक्षको सत्कर्मोंके जल सिंचने होंगे! महापुरुष लोग अविरत कार्यरत रहतें है, उनके प्रभुकार्यके सेवक हों तो अहोभाग्य! पुष्टि मिले!

महापुरुषका कर्मचक्र तो पूर्ण हो गया, उनके कर्मोंके फल किसको मिलेंगे? भगवान वे फल अपके भक्तको देतें है, जा आगे धप! तभी भक्तको भगवत्स्पर्श लगे! गद्गद हो जाय! अब वो कभी पीछे न हटेगा! आश्रय किसका है?

तो अपनी गति यांत्रिक न हो और भक्ति शास्त्रीय हो, उसका ध्यान रखकर प्रामाणिकतासे प्रयत्न करेंगे तो अवश्य ऐसा माधुर्य मिलेगा। जय श्रीकृष्णा।

कैसा मधुर अष्टक! वाक्य एक ही, मात्र शब्द और उसकी मधुरता! सर्वं मधुरं। भगवानकी उपदृष्टासे लेकर परमात्मा तककी स्थिति (गीता १३.२२) और जीवकी श्रवणंसे लेकर आत्मनिवेदनं तककी यात्रा.. मनुष्यसे लेकर ज्ञानीभक्त होनेकी प्रक्रिया, यह भारतीय संस्कृतिका दर्शन है। हजारों ऋषि-मुनि, आचार्यों, अवतारों और स्वयं भगवानने आकर यह सब समझाया है, उसे अनुसरना है!

मधुराष्टकं अर्थात् जीव-जगदीशका मिलन, पूर्णात्मा और परमात्माका मिलन! यहाँ ही गोपीगीत गाया गया है, रासलीला यहाँ हुई है! जिसे पाश्चात्य लोग Ocult Love.. अशरीरी प्रेम कहतें है, वह इस स्थितिमें प्राप्त होता है.. तैजससंगम!

श्रीवल्लभाचार्यके दृष्टिकोणसे समझें तो, जब प्रथम मानवदेह मिलता है तो वह प्राकृत होता है, उस प्रवाहमार्गीमें ज्यादा समझ न होगी। अब यदी वो आसुरी संपदासे जियेगा तो मनुष्यत्व गँवा देगा और दैवी संपदासे जियें तो आगे बढें; ऐसे जीव प्राकृतक्षेत्रमेंसे मर्यादा क्षेत्रमें आयेंगे। उनको सनातन संस्कृति मिलेगी, वहाँ पुरुषार्थ जैसे धर्मोंका आचरण होगा। इस मर्यादामार्गमें उन्हें दो रास्ते मिलेंगे, फिर जैसा संग! ज्ञानमार्ग या भक्तिमार्ग, कोई एक पसंद करेंगे और आगे बढेंगे!

आचार्यश्रीने संकलन करके कहा है, कलियुगमें भक्ति ही सर्वोत्तम आधार है, दूसरा कोई सरल उपाय नहीं है। जो भक्तिमार्गसे आगे बढेंगे उसे पुष्टि.. वृद्धि.. अनुमोदन मिलेगा, उनका विकास त्वरित होगा। इसी मार्गसे ही भगवानकी पुष्टि.. स्वीकृति है ऐसा आचार्यजीका दर्शन है। इसलिये भक्तिमार्गको पुष्टिमार्ग कहतें है।

अब प्रश्न है, जिसका निश्चित परिणाम मिले वो, सच्ची शास्त्रीय भक्ति है कहाँ! जो भक्ति हम कर रहें है, क्या वो यथोचित है? उसका मापदंड क्या? कोई पुष्टि मिल रही है? जिस रीतसे कर रहें है वह महापुरुषोंको मान्य है? या उनके नामसे खडी की हुई भ्रांत भक्ति कर रहें है? इन सभी प्रश्नोंके उत्तर स्वयं ही पानें होंगे।

हम जहाँ होंगे, जो भी करते होंगे, उसमें विकास होना चाहिये। जिस रीतसे वर्षोंसे कर रहें है और जीवनमें कोई परिवर्तन न दिखाई दें तो अर्थ क्या है? पूजा-पाठ यांत्रिक होकर निरस हुए हों, या करने पडतें है इसलिये चलतें है, ऐसा हो तो वे प्रगतिशून्य है। समूचा अर्थहीन है ऐसा नहीं है पर शास्त्रीय नहीं है। उसके

लिये विचारविमर्श करनेकी आवश्यकता है। कमसे कम, भगवानके प्रति नित्य प्रेम बढना चाहिये, ऐसा होता है क्या? भक्ति तो प्रतिक्षणवर्धनम् होती है!

दूजा, किसीकी कृपाका आधार नहीं रखना चाहिये। भगवानके सिवा कोई कृपा कर ही नहीं सकता। अन्य किसीकी कृपा है ऐसा मानते हो तो वह वहेम है, श्रद्धा नहीं अंधश्रद्धा है! ऐसे भ्रामक विचारोंसे या कहानियोंसे दूर रहेना चाहिये।

आज समाजका चित्र कुछ ऐसा है, घर-व्यवसाय ठीकसे चलें इसलिये या धंधेमें ज्यादा मुनाफा हो इसलिये, लोग भगवानको मानतें है। वैसे गलत तो नहीं है, भगवानसे ही मांगा जाय! पर वे लोग भक्तिके रास्तेमें है, भक्तिकी पगथी पर नहीं है। भक्तिकी पगथीका पहेला चरण ही निष्कामता है.. निःस्वार्थता है। सांसारिक कार्योंके लिये भक्ति नहीं है, परमार्थके लिये ही है और वो यथार्थभक्ति आचार्य श्रीवल्लभने दी है, उस दृष्टिसे उनके ग्रंथोंका चिंतन होना चाहिये।

अर्वाचीन ऋषिवर श्रीपांडुरंग शास्त्री, दादाजीने उनके प्रवचनमें कहा है, 'वल्लभचार्य भक्तिशास्त्रके बादशाह.. राजराजेश्वर है!' ऐसा जानकर आचार्यश्रीका साहित्य जाननेकी और अभ्यास करनेकी जिज्ञासा हुई; परिणाम स्वरूप दो स्तोत्र, श्रीवल्लभाचार्यजीके मधुराष्टकम् और यमुनाष्टकम्का चिंतन करके अनुक्रमसे, वल्लभं मधुरं और यमुनां नमामि, ये दो पुस्तिकाओंका प्रकाशन किया है। अन्य ग्रंथोंके प्रकाशन कुछ अवधिमें होंगे।

इतने महान साहित्यको पूर्णतः न्याय कौन दे सकेगा? कोई नहीं, इसलिये जो भी अंशतः प्रस्तुत किया है उसे, आप पूर्वग्रहरहित होकर, शांतचित्तसे पढेंगे तो यथोचित समझ पायेंगे। जो भी पढो उसका चिंतन मनन या विचार विमर्श अवश्य करें, जिससे कोई प्रश्न हो तो निराकरण हो सकें। ये पुस्तिकाएँ प्रभुप्राप्तिके मार्गमें, किसीको अल्प भी सहायक होगी तो, मैं यह प्रयत्न सार्थक समझुँगा। भगवान सभीको सच्ची भक्ति दें ऐसी अभ्यर्थना। जय श्रीकृष्ण।

आपका हितेच्छु,

प्रशांत देसाई

.. हरिॐ नमो भगवते श्रीकृष्णाय वासुदेवाय..

• श्रीकृष्ण आरति •

जय जय श्रीकृष्ण जय हरिहर श्रीकृष्ण
प्रेमरूप   परमेश्वर   प्रेमपूर्ण   योगेश्वर
मधुर प्रेम दाता जय ॐ जय श्रीकृष्ण। १

सर्वमें स्वयं समायें   विश्वमें व्याप्त विभु
सबमें आपको देखुं   सबको आपमें पाऊँ
आत्मीय अंतर्राम जय ॐ जय श्रीकृष्ण। २

जीवन रमतमें धर्मनियंता शरणसे सहायक
विश्व रमतके सर्जक   रम्य विश्व विसर्जक
रमतमें दो समता जय ॐ जय श्रीकृष्ण। ३

चिन्मयिन् चिदानंदित दिव्य तेजधारिन्
सर्व जीवोंमें चेतन चित्तमें भरो प्रचेतन
चिति शक्ति दाता जय ॐ जय श्रीकृष्ण। ४

परं पूर्ण श्रद्धासे भर दो   जीवन सत्त्व मेरा
श्रद्धासे सभी कर्मण श्रद्धासे तुम्हें अर्पण
कृपा करो घनश्याम जय ॐ जय श्रीकृष्ण। ५

राधाभाव दें यमुनामैया दें हरिचरण माया
भक्तिभाव स्वभाव हो भक्तिभाव सदा रहो
स्वीकारो मम अर्चा जय ॐ जय श्रीकृष्ण। ६

सत्कर्मोंकी करूँ प्रार्थना भरो कर्ममें प्राण
जीवन हो शुचिपूर्ण जीवन करो ऋणमुक्त
ज्ञानसे करूँ प्रणाम जय ॐ जय श्रीकृष्ण। ७

स्वामीस्पर्श रहे जीवनमें   सर्वतः सदाकाल
प्रशांतिमय हरपल रहें प्रासादिक हरपल रहें
मधुरेश्वर भगवान! जय ॐ जय श्रीकृष्ण। ८

• हरे कृष्ण • प्रशांत देसाई •